फ़ज़ाईले बिस्मिल्लाह

Compiler
मुफ्ती मुहम्मद फारूक़ साहब
जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ

Publisher:
मकतबा महमूदिया
जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ

किसी भी तरह की छपाई, डिज़ाईनिंग और प्रिन्टिंग के लिए संपर्क करें।
जैसेः किताबें, कैलेन्डर, पोस्टर, रसीद बुक, रजिस्टर, सनद, मोहर आदि
मुजीबुर्रहमान क़ासमी (मुस्कान प्रेस सुभाष नगर, मेरठ) 7895786325

फ़ज़ाइले बिस्मिल्लाह

मो0 फ़ारूक़ गुफ़िरा लहू
ख़ादिम जामिया महमूदिया, अलीपुर, मेरठ

प्रकाशकः
मकतबा महमूदिया
जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ। 245206

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

तफ़सीलात

नाम किताब	:	**फ़ज़ाइल-ए-बिस्मिल्लाह**
लेखक	:	**मो० फ़ारूक़** गुफिरा लहू खादिम जामिया महमूदिया, मेरठ
तादाद	:	5000
कम्पोज़िग	:	मुजीबुर्रहमान क़ासमी शोबा कम्प्यूटर जामिया हाज़ा
सन् प्रकाशन	:	1433 हि०, 2012 ई०
पेज	:	??
क़ीमत	:	??

मिलने का पताः

मकतबा महमूदिया

जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ। 245206

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

फ़हरिस्त

- अर्ज़े मुरत्तब
- मसला तुअव्वुज़
- अहकाम बिस्मिल्लाह
- मसला
- कुरआन पाक के शुरू में बिस्मिल्लाह
- हर अहम काम की इब्तदा में बिस्मिल्लाह
- हिकमत
- मकतूब हज़रत सुलेमान अलयहिस्सलाम
- आनहज़रत सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के मबतूब की इब्तदा
- जबीहा पर बिस्मिल्लाह
- शिकारी जानवर के शिकार का हुक्म
- बिस्मिल्लाह की अजीब तासीर
- तसदीक कुनिन्दा की जिम्मेदारी
- कश्ती हजरत नूह अलयहिस्सलाम का जारी होना
- बैतुल खला के वक्त बिस्मिल्लाह
- बवक्त वजू बिस्मिल्लाह
- खाने के वक्त बिस्मिल्लाह

- खाने के तीन आदाब
- जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए
- मकान में दाखिल होते वक्त बिस्मिल्लाह
- अगर खाने के शुरू में बिस्मिल्लाह भूल जाए
- फायदा
- बिस्मिल्लाह पढ़कर दरवाज़ा, मश्कीज़ा बन्द करना, बरतन ढांकना
- बवक्त जमाअत बिस्मिल्लाह
- हर हाल में बिस्मिल्लाह
- जरूरी तनबीह
- फजाइल बिस्मिल्लाह से मुतअल्लिक अहादीस
- बिस्मिल्लाह उम्दा लिखने पर मग़्फ़िरत
- जहन्नुम से निजात
- बच्चे की बिस्मिल्लाह की बरकत
- फायदा
- तौरेत की इब्तदा
- कुरआन करीम की सूरत की इब्तदा और इन्तहा की पहचान
- बच्चे की बिस्मिल्लाह की बरतक से बाप की मग़फ़िरत
- बिस्मिल्लाह की बरकत से ईमान की दौलत मिल गई
- बिस्मिल्लाह की बरकत से जहर बेअसर हो गया
- हिकमत व दानाई
- हज़रत बशर हाफ़ी रह० की तौबा का सबब

- रबूबियत की दो क्सिमें
- तसमिया के इसरार
- एक अहम वज़ीफ़ा
- एक और वज़ीफा
- क़जा-ए-हाजत के लिए एक वजीफा
- नुस्खा-ए-कीमिया
- सात सौ बरस की इबादत का सवाब
- हज़रत सुलेमान अलयहिस्सलाम की अंगूठी
- बिस्मिल्लाह का नुजूल
- बिस्मिल्लाह हर मर्ज के लिए शिफा है
- बैत
- बिस्मिल्लाह जीनतुल फातिहा है
- बिस्मिल्लाह आयते रहमत है
- दस हजार नेकियां
- शेर और भेड़ियों से बकरियों की हिफ़ाज़त
- बिस्मिल्लाह की आवाज़ से जादू भूल जाना
- शह बिस्ताम में जादू का असर न होना
- बिस्मिल्लाह जमीअ अज़कार का जौहर है
- बिस्मिल्लाह की अजीब वाकिआ
- बारह हजार बिस्मिल्लाह की फ़जीलत
- हर मुश्किल का हल
- जहन्नुम से आज़ादी
- माल में बरकत
- हज़रत अकरमा रजि० के ईमान का सबब

- हज़रत सिद्दीक़ अकबर रजि० का इरशाद
- हज़रत उमर फ़ारूक रजि० का इरशाद
- हज़तर उस्मान गनी रजि० का इरशाद
- फायदा
- हज़रत अली मुरतज़ा रजि० का इरशाद
- क़यामत की हौलनाकियों से निजात
- फरिश्ता-ए-अज़ाब की पेशानी पर बिस्मिल्लाह
- अनहार-ए-जन्नत की इब्तदा
- दर्द सर का इलाज
- बिस्मिल्लाह पढ़ने वालों के लिए मख्सूस महल
- दारूल नूर का जरिआ बिस्मिल्लाह

अर्ज़ मुरत्तब

नहमदुहू वनुसल्ली अला रसूलिहिल करीम। अम्मा बअद।

फ़जाइल "बिस्मिल्लाहर्रहमानिर्रहीम" एक मुख़्तसर रिसाला है। जिसमें "बिस्मिल्लाहर्रहमानिर्रहीम" के फ़जालइल को मुख्तसर तौर पर बयान किया गया है।

इस रिसाला में बअज़ आयात कुरआनिया पेश की गयी है।, जिनका तरजुमा हज़रत मौलाना मुफ्ती तक़ी उस्मानी जय्यद मजदहुम के आसान तरजुमे से नकल किया गया है। अक्सर अहादीस मुबारका नक़ल की गयी हैं जो मिश्कात शरीफ से माखूज़ हैं जिनका हवाला साथ-साथ नकल किया गया है। बअज़ मज़ामीन अहादीस व वाकिआत

से मुतअल्लिक हैं जो-

(१) कुरआनी दायरतुल मआरिफ़, फ़जाइल हिफ्जुल कुरआन, तालीफ़ शेख अब्दुल कादिर मुहम्मद ताहिर रहीमी ज़य्यद मजदहुम।

(२) कुरआन के हैरत अंगेज असरात व बरकात जो हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी नूर मरकदहू, हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना कारी मुहम्मद तय्यब कद्स सरह, शेखुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया मुहाजिर मदनी कुद्स सरह, शेखुल इस्लाम हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी ज़य्यद मजदहुम, हजरत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी ज़य्यद मजदहुम के मज़ामीन व अफादात का मजमूआ है।

(३) फ़जाइल "बिस्मिल्लाह" जो हज़रत मौलाना अहमद सईद दहलवी कद्स सरह की तसनीफ़ है जो मौसूफ की तफसीर सूरः अख़लास मारूफ बवहदत सईद के शुरू में मुलहिक़ है से माखूज़ हैं।

"बिस्मिल्लाहर्रहमानिर्रहीम" दरहकीकत एक इन्तहाई कीमती व मख़फी खज़ाना और एक नुस्खा अकसीर और नुस्खा कीमिया है जिसको कारईन किराम की खिदमत में पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूं।

हक़ तआ़ला शानहू इसको बेहद कबूल फरमाए और इसकी पूरी पूरी कदर दानी करने और इससे भरपूर फायदा उठाने की तौफ़ीक अता फरमाए। आमीन या रब्बुल आलमीन।

रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नकअ अन्तस समीउल अ़लीम।

वतुब अ़लयना इन्नकअ अन्तत तव्वाबुर्रहीम।

वसल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला ख़यरि ख़लकिही सय्यदना व मवलाना व ह़बीना मुहममदिंव व अ़ला आलिही अस्हाबिही अजमईन। इला यवमिद्दीन।

मुहम्मद फ़ारूक़ गुफ़रलहू
खादिम जामिआ महमूदिया अली पुर, हापुड़ रोड,
मेरठ, यू० पी०
२१/ रबीउससानी १४३३ हिजरी, शब जुमा

"बिस्मिल्लाहर्रहमानिर्रहीम"

शुरू अल्लाह के नाम से जो सब पर महरबान है,
बड़ा रहम वाला है।

मसला तअ़व्वुज़

तअव्वुज़ के माना हैं "अऊ़जु बिल्लाहि मिनश शयतानिर्रजीम।" पढ़ना।

कुरआन करीम में इरशाद है "फ़इज़ा क़रअतल कुरआनअ फस्तइ़ज़ बिल्लाहि मिनश शयतानिर्रजीम।" यानि जब तुम कुरआन की तिलावत करो तो अल्लाह तआला से पनाह मांगो शैतान मरदूद के शर से।

किरअत कुरआन से पहले तअव्वुज़ पढ़ना बा जमाअ उम्मते सुन्नत है, ख्वाह तिलावत नमाज के अन्दर हो या खारिज नामज़।

तअ़व्वुज़ पढ़ना तिलावत कुरआन के साथ मखसूस है, अलावा तिलावत के दूसरे कामों के शुरू में सिर्फ बिस्मिल्लाह पढ़ी जाए, ताअ़व्वुज़ मसनून नहीं। (आलमगीरी, बाब राबअ, मिनल कराहियतः)

जब कुरआन शरीफ़ की तिलावत की जाये उस वक्त अऊ़जु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह दोनों पढ़ी जाएं दरमियान तिलावत में जब एक सूरत खत्म होकर दूसरी शुरू हो तो सूरः बरात के अलावा हर सूरत के शुरू में मकर बिस्मिल्लाह पढ़ी जाए। अऊ़जु बिल्लाह नहीं और सूरः बरात गिर दरमियान तिलावत में आ जाए तो इस पर बिस्मिल्लाह न पढ़े, और अगर कुरआन की तिलावत सूरः बरात ही से शुरू कर रहा है तो उसके शुरू में अऊजु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह पढ़ना चाहिए। (आलमगीरया अनिल मुहीत)

अहकाम बिस्मिल्लाह

"बिस्मिल्लाहर्रहमानिर्रहीम" कुरआन मजीद में सूरः नमल में कुरआन पाक का जुज़ है और दो सूरतों के दरमियान मुस्तकिल आयत है। इसलिए इसका अहतराम कुरआन मजीद ही की तरह वाजिब है। इसको बे वजू हाथ लगाना जाइज़ नहीं। (अली मुख्तारुल करख़ी व साहिबुल काफ़ी वलहिदायः, शरह मनीह) और जिनाब या हैज़ व नफ़ास की हालत में इसको बतौर तिलावत पढ़ना भी पाक होने से पहले जाइज़ नहीं। हां किसी काम के शुरू में जैसे खाने पीने से पहले बतौर दुआ पढ़ना हर हाल में जाइज है।

(शरह मनीह कबीर)

मसलाः पहली रकअत के शुरू में "अऊजु बिल्लाह" के बाद "बिस्मिल्लाह" पढ़ना मसनून है। अलबत्ता इसमें इख़्तिलाफ़ है कि आवाज से पढ़ा जाये या आहिस्ता। इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० और बहुत से दूसरे अइमा आहिस्ता पढ़ने को तरजीह देते हैं।

पहली रकअत के बाद दूसरी रकअतों के शुरू में भी बिस्मिल्लाह पढ़ना चाहिए। इसके मसनून होने पर सबका इत्तेफ़ाक है और बाज़ रिवायात में हर रकअत के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ने को वाजिब हा गया है। (शरह मनीह)

मसअलाः नमाज़ में सुरः फातिहा के बाद सूरत शुरू करने से पहले बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ना चाहिए ख्वाह जहरी नमाज़ हो या सर्री, हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम और हज़रात खुलफ़ाए राशिदीन रिजवानुल्लाहु अलयहिम अजमईन से साबित नहीं है। शरह मनीह में इसकी को इमाम आज़म रह० और इमाम यूसुफ रह० का क़ौल है और शरह मनीह, दुर्रे मुख्तार, बरहान वगैरह में इसी को तरजीह दी है, मगर इमाम मुहम्मद रह० का कौल यह है कि सर्री नमाज़ों में पढ़ना बेहतर है। बाज रिवायात में यह कौल इमाम अबु हनीफ़ा रह० की तरफ भी मनसूब किया गया है और शामी ने बाज फ़क़अहा से इसकी तरजीह भी नकल की है। "बहश्ती जेवर" में भी इसी को अख्तियार किया गया है और इस पर सब का इत्तफ़ाक़ है कि कोई पढ़ले तो मकरूह नहीं। (शामी, मआरिफुल कुरआन, पृ०

७७)

कुरआन पाक के शुरू में बिस्मिल्लाह

कुरआन पाक शुरू करने के वक़्त तअ़व्वुज़ के बाद बिस्मिल्लाह पढ़ी जाती है। चुनांचि इस्लाम में सबसे पहले जो वही नाजिल हुई उसमें अल्लाह के नाम के साथ कुरआन शरीफ़ पढ़ने का हुक्म दिया गया है यानी "बिस्मिल्लाहि अल्ख" पढ़कर।

इरशाद खुदा वन्दी है-

इक़रअ बिस्मि रब्बिकल लज़ी ख़लक। ख़लक़ल इन्सानअ मिन अ़लक़। इक़रअ वरब्बुकल अकरमुल्लज़ी अ़ल्लमअ बिलक़लम। अ़ल्लमल इन्सानअ मालम यअ़लम।

"पढ़ो अपने परवरदिगार का नाम लेकर जिसने सब कुछ पैदा किया है। उसने इन्सान को जमे हुए खून से पैदा किया है, पढ़ो! और तुम्हारा परवरदिगार सबसे ज़्यादा करम वाला है, जिसने क़लम से तालीम दी, इन्सान को उस चीज़ की तालीम दी जो वह नहीं जानता था। " (आसान तरजुमा)

यह पांच आयात हैं जो सबसे पहले वही के तौर पर नाज़िल हुईं हैं। इन आयात में बेशुमार फ़वाइद हैं और खास तौर पर लिखने, पढ़ने की अहमियत बयान फरमाई गयी है।

और पहली आयत-

इक़रअ बिस्मि रब्बिकल लज़ी ख़लक। "पढ़ो अपने

परवरदिगार का नाम लेकर जिसने सब कुछ पैदा किया ।"

से यह इसतदलाल किया जा सकता है कि "बिस्मिल्लाहर्रहमानिर्रहीम" पढ़कर कुरआन पाक की तिलावत शुरू करनी चाहिए।

हर अहम काम की इब्तदा में बिस्मिल्लाह

इसलिए कि हर अहम काम के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना मुअज्जिब बरकत है। जिस अहम काम के शुरू में बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए वह ना तमाम रहता है और इसमें बरकत नहीं होती। हदीस शरीफ में है-

??

जो मुहतमिम बिश्शान काम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से शुरू न किया जाये वह नातमाम रहता है।

इसलिए कुरआन पाक शुरू करते वक्त भी बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़नी चाहिए।

लफ्ज़ "अल्लाह" अल्लाह तआला का ज़ाती नाम है।

जो दरहकीकत इसम-ए-आज़म है जब इसको खुलूस कल्ब से पढ़ा जाये अल्लाह तआला की अज़मत व किबरियाई और अपनी आजिज़ी व बेकसी और बेबसी के कामिल तसव्वुर के साथ तो इस इस्म पाक की अजीब व गरीब तासीर होती है।

"अर्रहमानिर्रहीम" यह दोनों अल्लाह तआला के सिफाती नाम हैं।

"रहमान" के मायने है वह जात जिसकी रहमत बहुत वसीअ हो । उस रहमत का फायदा सबको पहुंचता हो, अपने पराये, दोस्त दुश्मन, फरमांबरदार, नाफरमान। सब पर इसकी रहमत हो और यह शान चूंकि सिर्फ अल्लाह तआला की है इसलिये यह नाम "रहमान" भी सिर्फ अल्लाह तआला के साथ ही खास है अल्लाह तआला के अलावा किसी और को "रहमान" नहीं कहा जा सकता।

"अर्रहीम" रहमी वह जात है जिसकी रहमत बहुत ज्यादा हो यानी जिस पर हो मुकम्मिल तौर पर हो, दुनिया में अल्लाह तआला की शान रहमानी का जहूर है कि अपने, पराए, दोस्त, दुश्मन, फरमांबरदार, नाफरमान, सबको पालता है, सबको रिज़्क देता है।

और क़यामत में अल्लाह तआला की शान रहीमी का जहूर होगा कि क़यामत में सिर्फ अल्लाह तआला के नेक और फरमांबरदार बन्दों पर उसकी रहमत होगी और कयामत में जिन पर अल्लाह तआला की रहमत होगी कामिल दरजा की होगी कि उस रहमत के साथ किसी अदना दरजे की जहमत का शायबा भी न होगा।

हिकमत

हर अहम काम को बिस्मिल्लाह अल्ख से शुरू करने में हिकमत यह है कि बन्दा जब किसी काम को बिस्मिल्लाह

से शुरू करता है तो गोया अल्लाह तआला के इस्मे अज़ीम और उसके दो अहम सिफाती नामों के जरिये और उनका वास्ता देकर अल्लाह तआला से मदद तलब करता है जो अल्लाह तआला की इन्तहाई वसीअ और कामिल रहमत पर दलालत करते हैं जिसकी वजह से अल्लाह तआला की रहमत खासा उस शख्स के शामिल हाल हो जाती है और अल्लाह तआ़ला अपनी कुदरत कामिला के जरिये उसकी नुसरत व मदद फरमाते हैं और वह शख्स अपने मकसद में कामयाब हो जाता है।

यही वजह है कि हज़रात अंबिया अलयहिमुस्सलाम अपने मकातीब बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से शुरू फरमाते थे।

मकतूब हजरत सुलेमान अलयहिस्सलाम

चुनांचि कुरआन पाक में हजरत सुलेमान अलयहिस्सलाम का मकतूब ज़िक्र किया गया है जो उन्होंने बिल्क़ीस मलका-ए-सबा के नाम बजरिया हुदहुद इरसाल फरमाया है।

??????????????????????????

मलका ने अपने दरबारियों से कहा-

कौम के सरदारो! मेरे सामने एक बावक़ार ख़त डाला गया है। वह सुलेमान की तरफ से आया है और वह अल्लाह के नाम से शुरू किया गया है जो "रहमान" व

"रहीम" है। (इसमें लिखा है) कि मेरे मुकाबले में सरकशी न करो और मेरे पास ताबअदार बनकर चले आओ। (आसान तरजुमा)

आनहजरत सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के मकतूबात की इब्तदा

इमामुल अंबिया नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम भी अपने मकतूबात बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से शुरू फरमाया करते थे।

अबू अब्दुल कासिम बिन सलामह की किताब फज़ाइलुल कुरआन मे है कि हजरत रसूल मकबूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम सलातीन के तरफ जो मकतूब इरसाल फरमाते सबसे पहले लिखते "बिस्मिकल्लाहुम्मअ" जब तक अल्लाह तआला ने चाहा यही तरीका रहा फिर "बिस्मिल्लाहि मजरीहा" वाली आयत नाजिल हुई तो आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम "बिस्मिल्लाह" लिखवाने लगे जब तक अल्लाह तआला ने चाहा यही दस्तूर जारी रहा। फिर जब यह आयत नाजिल हुई "इन्नहु मिन सुलयमानअ व इन्नहू बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" तो "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" लिखवाने लगे।

चुनांचि आन हज़रत सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने

जो गिरामी नाम हरकुल कैसर रोम के नाम इरसाल फरमाया है जो बुख़ारी शरीफ में मज़कूर है वह भी बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से शुरू किया गया है।

ज़बीहा पर बिस्मिल्लाह

हलाल जानवर को ज़िबह करते वक्त भी बिस्मिल्लाह अल्ख पढ़ने का हुक्म है। यहां तक जानवर "बिस्मिल्लाह" पढ़कर जिबह किया जाए हलाल और पाकीजा हो जाता है और जिस जानवर पर जिबह करते वक्त बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाये ना जाइज़ व हराम हो जाता है।

अल्लाह तआला का इरशाद है-

"फकुलू मिम्मा जुकिरस्मुल्लाहि अलयहि इनकुनतुम बिआयातिही मूमिनीनअ वमालकुम इल्ला ताकुलू मिम्मा जुकिरस्मुल्लाहि अलयहि।"

चुनांचि हर उस (हलाल) जानवर में से खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो अगर तुम वाकई उसकी आयतों पर ईमान रखते हो।

और तुम्हारे लिये कौनसी रुकावट है जिसकी बिना पर तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो। (आसान तरजुमा)

जिस जानवर पर जिबह करते वक्त बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी गयी उसके बारे में इरशाद फरमाया-

"वला ताकुलू मिम्मा लम यज़कुरिस्मल्लाहि अलयहि।" (पारा-८, सूरः अलइनआम)

और जिस जानवर पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो उसमें से मत खाओ और ऐसा करना सख्त गुनाह है। (आसान तरजुमा)

शिकारी जानवर के शिकार का हुक्म

शिकारी जानवर कुत्ता, बाज़ वगैरह जिसको बाकायदा शिकार के लिए सधा लिया हो और फिर उस जानवर को बिस्मिल्लाह पढ़कर शिकार पर छोड़ा जाए और वह शिकार करले और उसके ज़िबह की नौबत न आ सके उससे पहले ही फौत हो जाये तो उसका खाना भी हलाल है।

और अगर उस शिकारी जानवर को शिकार पर छोड़ते वक्त बिस्मिल्लाह न पढ़ सके और जिबह से किबल मर जाए तो उसका खाना हलाल नहीं।

यसअलूनकअ माज़ा उहिल्लअ लहुम कुल उहिल्लअ लकुमुत तय्यिबाति वमा अल्लमतुम मिनल जवारिहि मुकल्लबीनअ तअलमूनअहुन्नअ मिम्मा अल्लमकुमुल्लाहु फकुलू मिम्मा अमसकनअ अलयहिम वजकुरुस्मल्लाहि अलयहि वत्तकुल्लाहअ इन्नल्लाहअ सरीउल हिसाब (पारा-६, सूरः अलमाइदा)

लोग तुम से पूछते हैं कि उनके लिए कौन सी चीज हलाल हैं कहदो कि तुम्हारे लिये तमात पाकीज़ा चीजें हलाल की गयी हैं और जिन शिकारी जानवरों को तुमने अल्लाह

के बताये हुये तरीके के मुताबिक सिखाकर (शिकार के लिए) सदहा लिया हो वह जिस जानवर को (शिकार करके) तुम्हारे लिये रोक रखें उसमें से तुम खा सकते हो और उस पर अल्लाह का नाम लिया करो, और अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (आसान तरजुमा)

आयत मुबारका में शिकारी जानवरों मसलन शिकारी कुत्तों, और बाज़ वगैरह के जरिये हलाल जानवरों का शिकार करके उन्हें खाना जिन शराइत के साथ जाइज है उनका बयान हो रहा है।

पहली शर्त यह है कि शिकारी जानवर को सधा लिया गया हो जिसकी अलामत यह बयान की गयी है कि वह जिस जानवर का शिकार करे उसे खुद न खाए बल्कि अपने मालिक के लिये रोक रखे।

दूसरी शर्त यह है कि शिकार करने वाला शिकारी कुत्ते को किसी जानवर पर छोड़ते वक्त अल्लाह का नाम ले यानी बिस्मिल्लाह पढ़े। (आसान तरजुमा)

बिस्मिल्लाह की अजीब तासीर

गर्ज कि बिस्मिल्लाह में अल्लाह तआला ने अजीब तासीर रखी है कि ज़बीहा पर बिस्मिल्लाह पढ़ने से ज़बीजा हलाल हो जाता है वरना हराम रहता है।

इसके साथ साथ यह भी तासीर है कि अगर जानवर को शरई तरीके पर बिस्मिल्लाह पढ़कर ज़िबह किया जाता है तो उस ज़बीहा के गोश्त में भी लज़्ज़त पैदा हो

जाती है जो गैर शरई जबीहा में हरगिज़ नहीं होती और इस लज़्ज़त को गैर मस्लिम साहिबान भी महसूस करते हैं। चनांचि बहुत से गैर मुस्लिम साहिबान को देखा गया कि वह मुसलमानों से शरई जबीहा के गोश्त को खरीदकर ही इस्तमाल करते हैं।

और वह उसको बयान करते हैं कि शरई जबीहा के गोश्त में जो लज़्ज़त होती है वह गैर शरई जबीहा में नहीं होती।

बाज़ दोस्तों ने बताया कि जानवर पर बवक्त जिबह बिस्मिल्लाह पढ़ने से जानवर को ऐसा सुरूर मयस्सर होता है कि उसमें मस्त होकर उसको ज़िबह की तकलीफ का ज्यादा अहसास नहीं होता।

इसी तरह बाज़ डॉक्टरों ने अपने साइंसी ज़राए से तहकीक की। उन्होंने बताया कि ज़मज़म की तासीर आम पानियों से बिल्कुल अलग है। इसी तरह जिस पानी पर बिस्मिल्लाह या कुरआन पाक की कोई आयत वगैरह पढ़कर दम कर दिया जाता है उस पानी की तासीर भी बदल जाती है।

पस खाने पीने की चीजों को खाने पीने के वक्त बिस्मिल्लाह पढ़ने से उसकी तासीर बदल जाए और उस खाने वगैरह में नूरानियत, बरकत, लज़्जत वगैरह पैदा हो जाए तो ताज्जुब की बात नहीं।

तनबीहः जिबह करने वाले को जिबह करते वक्त बिस्मिल्लाह अल्ख पढ़ने का बहुत अहतमाम करना चाहिए

चूंकि बिस्मिल्लाह अल्ख न पढ़ने से जबीहा हराम हो जाता है।

मजबह खानों फैक्ट्रयों में भी जहां जानवर जिबह किये जाते हैं मालिकों और जिम्मेदारों को बतौर खास उसकी तरफ तवज्जा देनी चाहिए कि कोई एक जानवर भी ऐसा न हो कि जिस पर जिबह करते वक्त बिस्मिल्लाह अल्ख न पढ़ी गई हो ख्वाह उस पर कितना ही खर्च करना पड़े और निगरानी के लिए भी आदमी मुकर्रर करना पड़े ताकि इत्मीनान हो जाए कि हर जानवर पर जिबह के वक्त बिस्मिल्लाह अल्ख पढ़ी गयी है। आज आमतन इसमें कोताही हो रही है जो बहुत खतरनाक है। इसलिए कि जब बिस्मिल्लाह अल्ख न पढ़ी गयी तो वह जबीहा हलाल न होगा बल्कि हराम हो जाएगा और लोग उसको खाएंगे तो हराम खाने का गुनाह और वबाल होगा और हराम ग़िजा के असरात भी जरूर होंगे। इसलिए जिममेदारों को उसकी तरफ खास तवज्जा देना इन्तहाई जरूरी है और दूसरे लोग इस महबह या फैक्ट्री के मालिक पर ऐतमाद करके उसको हलाल समझकर खाएंगे इसलिए उसको जिम्मेदार या फैक्ट्री का मालिक होगा।

तस्दीक कुनन्दा की जिम्मेदारी

बहुत से इदारे, जमईयतें, तनजीमें मजाबह और फैक्ट्रयों को तसदीक देते हैं कि यह गोश्त हलाल है, शरई तरीके पर हलाल किया गया है और इन इदारों की तसदीक

पर ऐतमाद करते हुये इस गोश्त को हलाल समझकर इस्तेमाल करते हैं। इसलिए इन इदारों, जमईयतों और तनजीमों की जिम्मेदारी है कि जब तक यह इत्मीमान न करलें कि एक एक जानवर बिस्मिल्लाह पढ़कर जिबह किया जाता है उस वक्त तक तसदीक नामा जारी न करें।

इसलिए बाज इदारे तसदीक के लिए शर्त लगा देते हैं कि हमारे निगरां मुकर्रर होंगे जो बाकाइदा निगरानी करेंगे कि एक एक जानवर पर बिस्मिल्लाह पढ़ी जा रही है।

निगरानी करने वालों की तनख्वाहें मजबह या फैक्ट्री के मालिक अदा करते हैं। इस निगरानी और इतमीनान के बाद ही वह उस जानवर पर अपनी मुहर लगाते हैं। यह उम्दा तरीका है जो इदारे महज़ इतमीनान पर तसदीक जारी कर देते हैं वह मुनासिब नहीं बल्कि अहतियात के खिलाफ है उनको ऐसा नहीं करना चाहिए चूंकि इस मामले में आमतन बहुत कोताहियां होती हैं।

फ़कत

कश्ती हजरत नूह अलयहिस्सलाम का जानी होना

सय्यदना हजरत नूह अलयहिस्सलाम की कश्ती का तूफान के अन्दर जारी होना और ठहरना बिस्मिल्लाह के जरिये ही होता था।

अल्लाह तआला का इरशाद है-

बिस्मिल्लाहि मजरिहा वमुरसाहा (पारा १२, सूरः अलहूद)

उसका चलना भी अल्लाह ही के नाम से और लंगर डालना भी। (आसान तरजुमा)

हालांकि वह तूफान कितना सख्त था जिससे तमाम नाफरमान कौम हिलाक कर दी गयी और इस तूफान की मौजें भी कितनी सख्त थीं अल्लाह तआला का इरशान है-

वहियअ तजरी बिहिम फी मवजि कलजिबाल। (पारा १२, सूरः अलहूद)

और वह कश्ती पहाड़ों जैसी मौजों के दरमियान चली जाती थी।

बाज मुफस्सिरीन ने फरमाया है कि दौरान तूफान जब हजरत नूह अलयहिस्सलाम कश्ती को रोकना चाहते थे तो बिस्मिल्लाह कह देते थे और जब चाहते थे कि चल पड़े तो बिस्मिल्लाह कह देते थे। (अनवारूल बयान ४/४६७)

बैतुल खला के वक्त बिस्मिल्लाह

बैतुल खला में दाखिल होते वक्त बिस्मिल्लाह पढ़ने का हुक्म है और फरमाया गया है कि उस वक्त बिस्मिल्लाह पढ़ने से जिन्नात और इनसान की शरमगाहों के दरमियान परदा हायल हो जाता है। चुनांचिक हदीस पाक में इरशाद है-

??

हजरत अली रजि० से मरवी है कि आन हजरत सल्ल० ने इरशाद फरमाया कि जिन्नात की आंखों और बनी आदम के सत्र के दरमियान परदा जब इनमें कोई बैतुल खला में दाखिल हो यह है कि वह बिस्मिल्लाह पढ़ ले।

बवक्त वजू बिस्मिल्लाह

वजू के वक्त भी बिस्मिल्लाह पढ़ने की ताकीद है बल्कि यहां तक कहा गया है कि वजू के वक्त जिसने बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी उसका वजू ही नहीं हुआ चनांचि हदीस पाक में है-

??

हजरत सईद इब्ने जैद रजि० से मरवी है कि हजरत रसूल पाक सल्ल० ने इरशाद फरमाया उसका वजू नहीं जिसने उस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया।

एक रिवायत में है-

??

जिस शख्स ने वजू किया और अल्लाह का नाम लिया (बिस्मिल्लाह) पढ़ी तो उसका वजू उसके तमाम बदन की तहारत का जरिया होगा और जिसने वजू किया और अल्लाह का नाम जिक्र नहीं किया (बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी) उसका वजू सिर्फ उसके वजू के आजा के लिये तहारत का बाअस होगी।

जाहिर है कि उससे मुराद गुनाहों की मआफी है।

इसलिए इससे क़ब्ल वाली रिवायत कि उसका वजू जिसने बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी में लाए नफी को नफी कमाल पर महमूल किया है। "ला वजूउल अल्ख" यानी उसका वजू कामिल नहीं बहरे सूरत वजू में बिस्मिल्लाह पढ़ने की ताकीद और अहमियत तो मालूम हो ही गई।

खाने के वक्त बिस्मिल्लाह

इसी तरह खाना खाते वक्त बिस्मिल्लाह पढ़ना खाने के आदाम में बयान किया गया है और खाना खाते वक्त बिस्मिल्लाह पढ़ना खाने में बरकत का जरिया है और खाने के वक्त अगर बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी तो खाने में बरकत नहीं होती।

खाने के तीन आदाम

उमर इब्ने अबी सलमा रजि० फरमाते हैं कि मैं बच्चा था। आन हज़रत सल्ल० की जेर परवरिश था। मेरा हाथ प्याला में इधर उधर पड़ रहा था। आन हजरत सल्ल० ने इरशाद फरमायाः

(१) बिस्मिल्लाह पढ़ो। यानी बिस्मिल्लाह पढ़कर खाओ।

(२) दाएं हाथ से खाओ।

(३) अपने करीब से खाओ।

हदीस पाक में खाने के तीन आदाम बयान फरमाए

हैं। इउनमें पहला अदब बिस्मिल्लाह पढ़कर खाना है।

फायदाः इससे यह भी मालूम हो गया कि छोटे बच्चों को साथ खिलाना चाहिए और शुरू ही से बच्चों की तरबियत की कोशिश करनी चाहिए।

जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए

अगर खाने के वक्त बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाये तो शैतान उस खाने को अपने लिए हलाल समझता है और उसमें शरीक हो जाता है। हदीस पाक में है-

??

हज़रत हुजैफ़ा रजि० से मरवी है कि हजरत रसूल पाक सल्ल० ने इरशाद फरमाया बिलाशुबा शैतान उस खाने को हलाल समझता है जिस पर बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी जाती।

मकान में दाखिल होते वक्त बिस्मिल्लाह

इसी तरह मकान में दाखिल होते वक्त बिस्मिल्लाह पढ़कर दाखिल होना घर में दाखिल होने का अदब है। अगर कोई शख्स बिस्मिल्लाह पढ़कर दाखिल होता है तो शैतान वहां रात नहीं गुजारता और वह मकान शैतान के असरात से महफूज रहता है।

और अगर कोई शख्स मकान में दाखिल होते वक्त बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ता तो शैतान भी उस मकान में रात गुजारता है और मकान वाले शैतान के असरात से मुतास्सिर होते हैं।

चुनांचि हदीस शरीफ में है-

??

हजरत जाबिर रजि० से मरवी है कि हजरत रसूल पाक सल्ल० ने इरशाद फरमाया जब कोई शख्स अपने घर में दाखिल होता है और दाखिल होते वक्त अल्लाह का ज़िक्र करता है। (बिस्मिल्लाह पढ़ता है) और खाने के वक्त भी बिस्मिल्लाह पढ़ता है तो शैतान (अपने चेलों से) कहता है न तुम्हारे लिये रात गुजारने की जगह है , न शाम का खाना और जब कोई अपने घर में दाखिल होता है और अल्लाह का जिक्र नहीं करता (बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ता) शैतान कहता है तुमने रात गुजारने की जगह को पालिया और जब खाने के वक्त भी बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ता शैतान कहता है तुमने रात गुजारने की जगह को भी पा लिया और शाम का खाना भी पा लिया।

फायदाः आज दुनिया जिन्नात और शयातीन के असरात से परेशान है अगर हर मोमिन बन्दा उसका अहतमाम करे कि खाने पीने के वक्त भी बिस्मिल्लाह अल्ख पढ़े, रात को मकान का दरवाजा बन्द करते वक्त भी बिस्मिल्लाह अल्ख पढ़े तो इस अमल की बरकत से जिन्नात और शयातीन के असरात बद सेहिफाजत हो जाएं।

अगर खाने के शुरू में बिस्मिल्लाह भूल जाए

इसी लिये हुक्म है कि अगर कोई शख्स खाना शुरू करते वक्त बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाये जब याद आए उसी वक्त बिस्मिल्लाह पढ़ ले।

??????????????????????????????

हजरत आइशा सिद्दीका रजि० से मरवी है कि हजरत रसूल पाक सल्ल० ने इरशाद फरमाया जब तुम में कोई शख्स खाना खाए और वह खाने पर अल्लाह का नाम लेना (बिस्मिल्लाह पढ़ना) भूल जाए उसको चाहिए (जब याद आए) यह पढ़ ले- "बिस्मिल्लाहि अव्वलुहू व आखिरुहू" इसके अव्वल भी बिस्मिल्लाह और इसके आखिर भी बिस्मिल्लाह।

और अगर शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ी मगर बाद में शरीक होने वालों ने बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी तो अव्वल खाने में बिस्मिल्लाह पढ़ने की वजह से बरकत होती है और बाद में बिस्मिल्लाह न पढ़ने वालों की नहूसत से बरकत उठ जाती है।

चुनांचि हजरत अबू अय्यूब अन्सारी रजि० एक वाकिआ नकल फरमाते हैं जो खुर हजरत नबी अकरम सल्ल० की मौजूदगी में पेश आया।

??

हजरत अबू अय्यूब अन्सारी रजि० फरमाते हैं कि हम हजरत नबी अकरम सल्ल० की खिदमत में हाजिर थे, खाना पेश किया गया हमने अव्वल खाने के वक्त इससे ज्यादा बाबरकत और इसके आखिर में कम बरकत वाला कोई खाना नहीं देखा।

हमने अर्ज कियाः या रसूलुल्लाह सल्ल० यह किस तरह हो गया?

आन हजरत सल्ल० ने इरशाद फरमाया कि हमने अव्वल जब खाना खाया बिस्मिल्लाह पढ़कर खाया फिर खाने वाला बैठ गया फिर (जब दोबारा उसने खाया) बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी। या दूसरा शख्स खाने के लिये बैठा और उसने खाना खाया और उसने बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी।

जिसकी वजह से शैतान ने उसके साथ खाया। (शैतान के उसके साथ खाने की वजह से बरकत जाती रही।)

एक दफ़ा आन हजरत सल्ल० की मौजूदगी में एक शख्स बिस्मिल्लाह पढ़े बगैर खाना खाता रहा जब उसको याद आया उसने बिस्मिल्लाहि अव्वलुहू व आखिरुहू पढ़ा शैतान ने सब खाया हुआ कैय कर दिया।

??????????????????????????????????????

उमय्या इब्ने मख्शी रजि० फरमाते हैं कि एक शख्स खाना खा रहा था और उसने बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी यहां तक कि जब एक लुक्मा बाकी रह गया और उसने उसको अपने मुंह की तरफ उठाया उस वक्त उसने "बिस्मिल्लाहि

अव्वलुहू व आखिरुहू" पढ़ा। आन हजरत सल्ल० मुस्कराए और इरशाद फरमाया कि शैतान उसके साथ बराबर खाता रहा और जब उसने बिस्मिल्लाह पढ़ी तो उसने (शैतान) सब खाया हुआ कैय कर दिया।

फायदाः आज हर आदमी खाने में बेबरकती की शिकायत करता है अगर खाना खाते और पानी पीते वक्त बिस्मिल्लाह अल्ख पढ़कर खाने, पीने का अहतमाम करें तो यह शिकायत खत्म हो जाए।

बिस्मिल्लाह पढ़कर दरवाज़ा, मश्कीजा बंद करना, बरतन ढांकना

इसी तरह रात को बिस्मिल्लाह पढ़कर दरवाजा बन्द करने, खाने, पीने के बरतनों और मश्कीजों को भी बिस्मिल्लाह पढ़कर बन्द करने की ताकीद है कि बिस्मिल्लाह की बरकत से यह चीजें शैतानी असरात से महफूज हो जाती हैं।

हजरत जाबिर रजि० हजरत रसूल करीम सल्ल० का इरशाद नकल करते हैं-

??

बिस्मिल्लाह पढ़कर दरवाजे बंद कर लिया करो इसलिए कि शैतान बन्द दरवाजों को नहीं खालता। यानी

बिस्मिल्लाह पढ़कर जब दरवाजा बन्द किया जाए तो शैतान उसको खोल नहीं सकता और बिस्मिल्लाह पढ़कर अपने मश्कीजें बंद कर दिया करो और बिस्मिल्लाह पढ़कर अपने बरतनों को ढांक दिया करो। अगरचि कोई चीज ही उस पर रख दो और अपने चिराग बुझा दिया करो।

बवक्त जमा बिस्मिल्लाह

बीवी से जिमा के वक्त भी बिस्मिल्लाह पढ़ने का ज़िक्र है कि अगर कोई शख्स बवक्त जिमा बिस्मिल्लाह और दुआए मासूरह पढ़ लेता है तो शैतान उसको नुकसान नहीं पहुंचा सकता।

अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रजि० से मरफूअन रिवायत है-

??

अगर तुम मे एक आदमी जब अपनी बीवी के पास आए यह दुआ पढ़ ले-

??

बिस्मिल्लाह ऐ अल्लाह! बचा हमको शैतान से और उसको भी शैतान से बचा जो बच्चा आप हम को अता फरमाएं। फिर अगर बच्चा अता कर दिया जाए तो शैतान उस बच्चे को कोइ जरर नहीं पहुंचाता।

हर हाल में बिस्मिल्लाह

इस हदीस शरीफ पर हजरत इमाम बुखारी रह० ने

बाब कायम किया है-

??

हर हाल के वक्त और जिमा के वक्त बिस्मिल्लाह पढ़ना गोया हजरत इमाम बुखारी रह० ने "इन्दअ कुल्लि हाल" लाकर उसकी तरफ इशारा किया है कि बिस्मिल्लाह को हर हर हालत में पढ़ना चाहिए।

और इस्तदलाल उससे किया है कि जब जिमाअ के वक्त भी बिस्मिल्लाह पढ़ने की ताकीद व तरगीब है इससे मालूम हुआ कि हर हर हालत में हर हर मौके पर बिस्मिल्लाह पढ़ने का अहतमाम करना चाहिए।

जरूरी तनबीह

अलबत्ता ऐन जिमाअ के वक्त जब आदमी बरहना होता है उस वक्त अल्लाह का नाम लेना बेअदबी है इसलिए उस वक्त बिस्मिल्लाह और दुआ नहीं पढ़ना चाहिए बल्कि बरहना होने से कब्ल इरादा जिमाअ के वक्त उसको पढ़ना चाहिए।

इस तरह बैतुल खला में कदमचे पर बैठकर सतर खोलने के बाद बिस्मिल्लाह और दुआ नहीं पढ़ना चाहिए कि उस वक्त पढ़ना बेअदबी होने की वजह से मकरूह है, बल्कि बैतुल खला में दाखिल होने के वक्त पढ़ना चाहिए।

फजाइल बिस्मिल्लाह से

मुतअल्लिक बाज़ अहादीस मुबारका और वाकिआत फजाइल बिस्मिल्लाह से

मुतअल्लिक बाज़ अहादीस

??

जो शख्स यह चाहता है कि अल्लाह तआला उसको उन्नीस जबानिया फरिश्तों से निजात देदे जो दोजख के दारोगा हैं उसको चाहिए कि बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़े ताकि अल्लाह तआला इन (उन्नीस) हुरफों में से एक-एक हुरुफ को उसके लिए फरिश्ते से ढाल बना दें। (वह फरिश्ते अपने तमाम अफआल में बिस्मिल्लाह पढ़ते हैं। बिस्मिल्लाह ही के जरिये उनके अन्दर ताकत आती है और उसी के जरिये वह अजाब देने पर कादिर होते हैं)

बच्चे की बिस्मिल्लाह की बरकत

??

हज़रत इब्ने अब्बास रजि० हुजूर सल्ल० से आपका यह फरमान रिवायत करते हैं कि जब उस्ताज बच्चे से

कहता है पढ़ो "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" फिर बच्चा पढ़ता है तो अल्लाह तआला उस बच्चे के लिये और मुअल्लिम और उसके वालिदेन के लिये जहन्नुम से आजादी लिख देते हैं। (जहरूल फिरदोस व मसनदुल फिरदोस)

फायदाः फजीलत बिस्मिल्लाह की मुतअल्लिक एक ज़मनी हदीस-

बाज़ मवाइज़ ..... की किताबों में यह हदीस दर्ज है कि जब कोई बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ता है तो जन्नत कहती है लब्बैक वसअदियकअ अल्लाहुम्मअ अदखिलहुल जन्नतअ" मैं हाजिर हूं और ताबअदार हूं ऐ अल्लाह! उसको जन्नत में दाखिल फरमा दीजिये और जब कोई तीन बार सवाल जन्नत करे तो खुद जन्नत कहती है "अल्लाहुम्मअ अदखिलहुल जन्नतअ" और जब कोई तीन बार दोजख से पनाह मांगे तो खुद दोज़ख कहती है "अल्लाहुम्मअ अजिरना मिनन्नार" बारे इलाहा! इस शख्स को आग से पनाह दे। (नजहतुल मजालिस मअ उर्दू तरजुमा खैरुल मजालिस पृ० ५४६)

तोरेत की इब्तदा

(५) तोरेत का अव्वलीन मजमून यह था बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कुल तआलव उतलु मा हर्रमअ रब्बुकुम अलयकुम" (कअब रजि०) (कअब अहबार रजि० ही की एक और रिवायत में यह है कि तोरात का इफ्ततही मजमून शुरू सूरः इनआम का मजमून है। तफसीर करतबी

६/३८२)

कुरआन करीम की सूरत की इब्तदा और इन्तहा की पहचान

(६) अहद नबवी सल्ल० में जब तक "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" नाजिल न हो जाती हम सूरत का इख्तताम न पहचान सकते थे। "बिस्मिल्लाह" के नाजिल होने के बाद ही हम पहचानते थे कि पहली सूरत खत्म हो गयी और अब दूसरी सूरत शुरू हो गयी है। (मुरासील अबी दाऊद मद सईद बिन जबीर)

बच्चे की बिस्मिल्लाह की बरकत से बाप की मगफिरत

इमाम राज़ी रह० ने तफसीर में लिखा है कि एक मरतबा हजरत ईसा अलयहिस्सलाम का गुजर एक कब्र पर हुआ जिसमें मय्यत को अजाब दिया जा रहा था। दोबारा जब वहां से गुजर हुआ तो देखा कि कब्र में रहमत के फरिश्ते हैं। अजाब की तारीकी के बजाए वहां अब मगफिरत का नूर है। आपको ताज्जुब हुआ। अल्लाह तआला से इस अकदे को हल करने की दुआ की तो अल्लाह ने उनकी तरफ वही भेजी कि "यह बन्दा गुनाहगार था जिसकी वजह से मुब्तलाए अजाब था। मरते वक्त उसकी बीवी उम्मीद से

थी, उसका बच्चा पैदा हुआ, वह बच्चा मकतब में दाखिल कर दिया गया। उस्ताद ने उसे पहले दिन बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ाई तब मुझे अपने बन्दे से हया आई कि मैं जमीन के अंदर उसे अजाब देता रहा हूं जबकि उसका बेटा जमीन के ऊपर मेरा नाम लेता है। और मुझको रहमान व रहीम कहता है। (तफसीर कबीर)

बिस्मिल्लाह की बरकत से ईमान की दोलत मिल गयी

एक यहूदी एक यहूदिया औरत पर आशिक हुआ। वह उसके इश्क में मजनून सा हो गया और खाना पीना उसको अच्छा न लगता था। चुनांचि वह अता अकबर के पास आया और उन्होंने उसका हाल दरयाफ्त किया । उसके बाद अता ने एक कागज पर बिस्मिल्लाह लिख दी और उससे फरमाया कि उसको निगल जा। अल्लाह तआला तुझको इससे तसल्ली दे या उस औरत को तेरे नसीब में करदे। जब उसने उसको निगला तो कहा- ऐ अता! बेशक मै।ने ईमान की हलावत पाई और मेरे दिल में उसका असर जाहिर हुआ अैर मैं उस औरत को भूल गया। अब आप मेरे सामने ईमान पेश कीजिए। अता रह० ने उस पर ईमान पेश किया और वह बिस्मिल्लाह की बरकत से मुसलमान हो गया। उसके बाद औरत ने उसके इस्लाम की खबर सुनी वह भी अता रह० के पास आई और कहा ऐ मुसलमानों के

इमाम! मैं ही वह औरत हूं जिसका उस यहूदी ने आप से जिक्र किया था, जो मुसलमान हुआ है और मैंने गुजिश्ता शब को अपने ख्वाब में देखा है कि मेरे पास एक आने वाला आया और उसने मुझसे कहा अगर तू अपना मक़ाम जन्नत में देखना चाहती है तो अता रह० के पास जा, वह तुझे वह मुकाम दिखा देगा। अब मैं आपके पास आई हूं। पस आप मुझसे फरमाइये कि जन्नत कहां है? अता रह० ने उससे कहा- अगर तू जन्नत देखना चाहती है तो पहले तुझ पर लाजिम है कि उसका दरवाजा खोल। उसके बाद उसमें दाखिल हो, उस औरत ने कहा मैं उसका दरवाजा क्योंकर खोलूं ? अता रह० ने फरमाया कि बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम कहो। चुनांचि उसने कहा। फिर उस औरत ने कहा कि ऐ अता रह० मैं अपने दिल में नूर पाती हूं और अल्लाह तआला की खुदाई और आलमे आखिरत देखती हूं। आप मुझ पर इस्लाम पेश कीजिए। चुनांचि अता रह० ने उस पर इस्लाम पेश किया और वह बिस्मिल्लाह की बरकत से मुसलमान हो गई। फिर वह अपने घर गई और उस रात सोई तो उसने अपने ख्वाब में देखा कि वह जन्नत में दाखिल हुई और महलात और कबे देखे और उसमें एक कबा देखा जिस पर लिखा हुआ है- "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लाइलाहअ इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्ररसूलुल्लाह" उस औरत ने उसको पढ़ा। नागाह एक मुनादी को सुना कि वह कहता है- ऐ पढ़ने वाली बीबी! ऐसे ही अल्लाह तआला ने तुझको वह तमाम चीजें दे दीं जिनको

तूने पढ़ा और देखा है। उसके बाद वह औरत बेदार हुई और कहा- इलाही! मैं जन्नत में दाखिल हो चुकी थी पस तूने मुझे उससे बाहर कर दिया। ऐ माबूद! तू अपनी कुदरत से मुझे दुनिया के गम से निकाल दे। जब वह अपनी दुआ से फारिग हुई तो उसका घर उस पर गिर पड़ा और वह मरकर शहीद हो गई। अल्लाह तआला ने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम और अल्हम्दु की बरकत से उस पर रहम फरमाया। (अनवार महबूबी)

बिस्मिल्लाह की बरकत से जहर बे असर हो गया

अबू मुस्लिम रह० की एक लौंडी थी जो उनसे बुग्ज़ व अदावत रखती थी और उनको जहर पिलाती थी। लेकिन वह उन पर कुछ असर न करता था। जब इस तरह एक अरसा गुजर गया तो उस लौंडी ने अबू मुस्लिम से कहा कि मैंने तुम्हें जमाना दराज तक जहर पिलाया मगर वह तुम पर असर अन्दाज नहीं हुआ। अबू मुस्लिम ने उससे कहा तू यह क्यों करती रही है? उसने यह कहा कि तुम बहुत बूढ़े हो गये हो। अबू मुस्लिम ने उससे कहा कि जहर के असर न करने की वजह यह है कि मैं खाने और पीने के वक्त बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ता हूं। फिर उन्होंने उस लौंडी को आजाद कर दिया। (अनवार महबूबी)

तंबीहः हजरत खालिद बिन वलीद रजि० के बारे में

भी मश्हूर है कि उन्होंने बिस्मिल्लाह पढ़कर जहर का प्याला पिया और उन पर जहर का कुछ असर नहीं हुआ।

हिकमत व दानाई

मन्सूर बिन अम्मार की तौबा का सबब यह हुआ कि उन्हों ने रास्ते में एक परचा पाया जिसमें बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखी हुई थी। उसको रखने के लिए कोई जगह न मिली तो उसे चबा गये। रात को ख्वाब में देखा कि कोई कहने वाला कह रहा है- इस परचे के अहतराम व ऐजाज के सबब हक सुब्हानहू तआला ने तुझ पर हिकमत के दरवाजे खोल दिये हैं।

हजरत बशर हाफी रह0 की तौबा का सबब

हजरत बशर बिन हारिस हाफी रह० की तोबा का सबब यह हुआ कि उन्होंने देखा कि एक टुकड़ा सरे राह पड़ा, पाँव के नीचे रूँदा जा रहा है। उन्होंने उसे उठाया तो उसमें अल्लाह तआला का नाम मुबारक बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखा हुआ था। उन्होंने एक दिरहम का इत्र खरीदकर उसे लगाया और दीवार की दराज़ में रख दिया। जब सोए तो ख्वाब में देखा कोई कह रहा है ऐ बशर! तूने मेरे नाम का मुअत्तर किया है, मैं तेरे नाम को दुनिया व आखिरत में मुअत्तर करूंगा। चुनांचि ऐसाा ही

हुआ। इब्तदा उनकी जिन्दगी अच्छी न थी। इस वाकिए के बाद उन्होंने पक्की सच्ची तोबा करके मुजाहिदात शुरू किए और ऊँचे दरजे के औलिया अल्लाह में शामिल हो गए। हत्ता कि मशहूर है कि उनके लिये तैय अर्ज होता था और उनके तैय अर्ज के बहुत से वाकिआत मशहूर हैं। और फिर उन पर अदब का इस दरजा ग़लबा हुआ कि जमीन पर नंगे पैर चलते थे और फरमाते थे कि जमीन शाही फर्श है अल्लाह तआला का इरशाद है। वलअरज़ि फरशनाहा फनिमल माहिदून। कि हमने जमीन को फर्श बनाया है और हम कितना अच्छा फर्श बिछाने वाले हैं और शाही फर्श पर जूता पहनकर चलना बेअदबी हैं इसलिए जमीन पर नंगे पैर चलते थे। इसीलिए उनको हाफी कहा जाता है। हाफी नंगे पैर आदमी को ही कहते हैं और अल्लाह तआला की तरफ से भी उनके साथ यह मआमला था कि जिन रास्तों से हजरत बशर हाफी गुजरते थे उन रास्तों पर जानवर पाखाना वगैरह नहीं करते थे।

रबूबियत की दो किस्मे

एक मुहक्किक़ आरिफ ने बयान किया कि बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम में इस्मे आज़म है क्योंकि उसको रबूबियत की तरफ मनसूब किया जाता है तो इसकी दो किस्में हो सकती हैं, एक किस्म वह जिसकी वजह से ताज़ीम का इजहार है और एक किस्म वह जिससे शान की बुलन्दी जाहिर होती है। एक यह कि ताजीम अल्लाह की वह चादर

है जो आलम में हमेशा कायम है और मखलूक़ में फैली हुई है क्योंकि मुकर्रबीन और अस्हाबुल यमीन की तारीफ के बाद ''फसब्बिह बिस्मि रब्बिकल अ़ज़ीम'' है और हक्कुल यकीन के बाद मुकज्ज़िबीन, अज्जाल्लीन की तारीफ आई है तो जिस शख्स को मुकर्रबीन, अस्हाबुल यमीन और मुकज़्ज़िबीन का राज मालूम हो गया है और हक्कुल यकीन का दरजा हासिल हो गया है। उसने आलम में अल्लाह तआला की पूरी पूरी अजमत का मुशाहिदा कर लिया और अल्लाह तआला के इस्म आज़म को बखूबी जान लिया।

दूसरा पहलू यह है कि ऊपर से नीचे की तरफ हर उस शख्स के लिये जिसका दिल खाकी में और हिजाबी कश्फ से पाक है क्योंकि शक्लें दो ही किस्म की हैं एक हबूती और दूसरी उरूजी और यह मजकूरा शकल हिबूती है क्योंकि इस्म आज़म दाइरा हसीह हकीकह तरकीबह में शामिल है और शक्ल उरूजी इस्म की इजाफत है रबूबियत की तरफ लिहाजा मरातिब अलविया तीनों पहलू से शहूदी हैं अरवाह कुदसिया में इसके बाद मुकर्रबीन और उसके बाद अस्हाबुल यमीन हैं और मरातिब सिफलिया तीन हैं।

अल्लजी खलकअ फसव्वा वल्लजी कद्दरअ फहअदा वल्लजी अखरजल मरआ।

तो मरातिब अलविया आलम ईजाद में मरातिब सिफलिया का बातिन हैं और मरातिब सिफलिया जाहिर हैं और इस्म रबूबियत मौजूदात में जहूर पजीर होता है और इस्म उलूहियत हकायक मौजूदात पर गालिब है तो जब इस्म

अल्लाह यानी बिस्मिल्लाह को मुजाफ किया जाये तो रहमानियत जाहिर होती है तो अजमत और उलू रबूबियत की सिफ़त है और रहमानियत उलूहियत की सिफत है मगर रबूबियत जाहिर है और उलूहियत बातिन है और यह निसबत ''फसब्बिह'' की ही है और इस्म की निस्बत अल्लाह की सी निसबत है और इकरा की निसबत बिस्म की सी निसबत है और इस्म की निस्बत अल्लाह की सी निस्बत है और ''रब्बिकअ'' की निसबत रहमान की सी निसबत है और ''अल्लज़ी खलक़अ'' की निसबत रही की सी निसबत है मगर यह तीन निसबतें नीचे से ऊपर तरक्की करती हैं और वह तीन ऊपर से नीचे को आती हैं और सिफलियात की कुंजियाँ अलवियत के बाद हैं तो सब्बह बिस्मिकअ गीबत है और सब्बिहिस्मअ रब्बिकल आअ़ला दूसरी गीबत है और इकरा बिस्मि रब्बिकल लज़ी खलक तीसरी गीबत है और बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम गीबत है और ऐसा ही कुरआन करीम में सब समझना चाहिए।

तसमिया के असरार

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम तीन आलम पर मुश्तमिल है- आलमुल मुल्क, आलमुल खल्क और आलमुल अम्र। चुनांचि इरशाद इलाही है ''अला लहुल खल्क वलअम्र'' और बिस्मिल्लाह तमाम आलमों के बारे में फायदामन्द है और इसमें इन्तहा व इब्तदा का भेद है और इसमें तौहीद के मरातब हैं क्योंकि बिस्मिल्लाह मुकाबिल है ''शहद

अल्लाह'' के अर्रहमान मुकाबिल है ''वलमलाइकतअ'' के और अर्रहीम मुकाबिल है ''व उलुल इल्म'' के लिहाजा बिस्मिल्लाह का अव्वल उसके आखिर और उसका जाहिर उसके बातिन की तरह है और अल्लाह तआला ने उसी से मौजूदात का दरख्त पैदा किया और उसी से मख्की अमूर के राज जाहिर फरमाए इसीलिए जो आदमी कसरत से बिस्मिल्लाह का विर्द करे वह अलवी व सिफली दोनों किस्म की मखलूकात के नजदीक बा हैबत हो जाता है और जो शख्स इसके वह राज जो अल्लाह तआला ने इसमें रखे हैं जान ले और उन्हें किसी चीज पर लिखा दे तो वह आग में नहीं जलेगी और इसी में अल्लाह तआला के इस्म आजम का भेद है।

एक अहम वज़ीफा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाह तआला अनहा फरमाते हैं कि अगर किसी आदमी को कोई हाजत हो तो वह बुध जुमेरात और जुमे का रोज़ा रखे और जुमे के दिन अच्छी तरह साफ सुथरा होकर जुमे की नमाज को जाता हुआ रास्ते में एक या दो तीन रोटियां खैरात करदे और नमाज जुमा से फारिग होकर यह दुआ पढ़ेः

तो उसकी हाजत फौरन पूरी हो जाएगी और आप रजि० फरमाते थे कि यह अमल जाहिल बेवकूफों को हरगिज न बताओ ऐसा न हो कि वह किसी के नुकसान के

लिए यह दुआ पढ़ दें और वह कबूल हो जाए।

एक और वज़ीफा

हजरत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अनहू रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फरमाया जो हाजतमन्द आदमी अच्छी तरह वजू करे, दो रकअत नमाज़ पढ़े पहली रकअत में सूरः फातिहा और आयतुल कुरसी और दूसरी में फातिहा और आमनल रसूलु आखिर तक पढ़े और तशहहुद पढ़कर और सलाम फेरकर यह दुआ मांगेः

अल्लाहुम्मअ या मूनिसअ कुल्लि वहीदिन वया साहबअ कुल्लि फरीदिन वया करीबन गयरअ बईदिन वया शाहिदन गयरअ गाइबिन वया गालिबन गयरअ मगलूबिन या हययु या कययूमु या ज़ल जलालि वल इकराम या बदीअस समावाति वलअरज़ि अल्लाहुम्मअ इन्नी असअलुकअ बिस्मिकअ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल हययुल कययूमिल्लज़ी अनत लहुल वजूहु वखअशअत लहुल अस्वातु ववजलत मिन खशयतिल कुलूबु अन नुसल्ली अला सयियदिना मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन व अनतुकजी ली कज़ा वकाजा। (कजा व कजा की जगह अपनी हाजन को जहन में लाए।)

कजा हाजत के लिए एक वजीफा

मैंने एक आरिफ का लिखा हुआ देखा है कि हज़रत

जाफर सादिक रजियल्लाह तआला अनहू ने फरमाया अगर किसी को बहुत ही सख्त हाजत पेश आए तो वह एक काग़ज के टुकड़े में लिखे-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम मिनल अबदिज़ जलीलि इलर्रब्बिल जलीलि रब्बि इन्नी मस्सनिज जुर्रू वअन्तअ अरहमुर राहिमीन।

फिर इस कागज को बहते हुए पानी में डाल दे और कहे

इलाही बिमुहम्मदिन व आलिहित तयियिबीनअ वसहबिहिल मुरतजीनअ इकज़ि हाजती या अकरमल अकरमीन।

और जो हाजत हो उसका नाम ले। इनशाअल्लाह उसकी हाजत पूरी हो जागी।

बाज बुजुरगों से मनकूल है कि जो शख्स बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बारह हजार मरतबा पढ़े और हर हजार के बाद दो रकअत नफिल अदा करे और जा हाजत हो उसके पूरे होने की दुआ मांगे फिर पढ़ना शुरू कर दे और हर हजार पर दो नफिल भी पढ़े और दूआ भी मांगे इसी तरह बारह हजार खत्म करे अल्लाह तआला के फज्ल से उसकी हाजत पूरी होगी।

अगर कोई जरूरतमन्द आदमी सुबह की नमाज के बाद बोलने से पहले मजकूरा जेल दुआ पढ़े तो उसकी जरूरत पूरी होगी-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम वला हवलअ वला कुव्वतअ

इल्ला बिल्लाहिल अलिय यिल अजीम। या हययु या कययूम या हकीम या कदीम या दाइम या फरिद या वतरिया या अहद या समद।

शेख बाखमीम ने शेख अब्दुल कुंवर को खत में लिखा कि ऐ दोस्त! मैं आपको इस्म आजम का तोहफा देता हूं। सुबह की नमाज के बाद सत्तर मरतबा यूं दुआ मांगो-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम वला हवलअ वला कुव्वतअ इल्ला बिल्लाहिल अलिय यिल अजीम। या हययु या कययूम या कदीम या दाइम या समद या वदूदु या वतरिया जुलजलालि वल इकराम।

अहादीस मजकूरा बाला से मालूम हो गया कि शरीअत इसलामिया में हर हर काम करने के मौके पर बिस्मिल्लाह शरीफ पढ़ने की ताकीद व तरगीब है।

नुस्खा कीमिया

दर हकीकत बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम एक नुस्खा कीमिया है जो बतौर खास इस उम्मत को अता हुआ है कि बन्दा बिस्मिल्लाह के जरिये अल्लाह तआला के इस्म आजम के जरिये हक तआला शानहू की अजमत व जलाल और उसके सिफात कमालिया व रहमानिया का वास्ता देकर अपने खालिक व मालिक से अपनी मदद व नुसरत की दरख्वास्त करता है जिसके जरिये हक तआला शानहू की मदद व नुसरत बन्दा के शामिल हाल हो जाती है।

नीज इस अमल के जरिये कि बन्दा हर काम करते

हुये बिस्मिल्लाह का विर्द करे। बन्दा का हक तआला शानहू से एक खास ताअल्लुक और खास राब्ता हो जाता है गोया बन्दा हर वक्त अपने खालिक व मालिक के साथ मश्गूल है और हर काम के वक्त अपनी आजिज़ी व बे कसी और बे बसी जाहिर करके अपने खालिक व मालिक से फरयाद कर रहा है जिसकी वजह से उस खालिक व मालिक और ''रहमान'' व ''रहीम'' की कुदरत व रहमत उसको अपने आगोश में लिये हुए है।

कोई इन्सान किसी दुनियवी हाकिम से ताअल्लुक रखता है और अपनी इताअत व फरमांबरदारी अपनी वफादारी का पूरा सबूत देता है और फिर अपनी किसी जरूरत में उससे दरख्वास्त करता है यकीनन वह हाकिम उसकी मदद के लिये अपनी पूरी कुव्वत सर्फ कर देता है।

फिर खालिक व मालिक जो जबरदस्त कुदरत वाला भी है अपने बन्दों पर ''रहमान'' व ''रहीम'' भी है जब उसकी कुदरत व रहमत किसी बन्दा के शामिल होगी वह किस तरह महरूम रह सकता है ?

गर्ज कि बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अजीब नुस्खा कीमिया और नुस्खा अकसीर है जिसकी वजह से बन्दे का ताअल्लुक अपने खालिक व मालिक के साथ इन्तहाई कवी और मजबूत हो जाता है और हक तआला शानहू की नुस्रत व रहमत बन्दे के शामिल हाल हो जाती है और अगर गौर किया जाये पूरे कुरआन पाक का मकसद यही है कि बन्दा का ताअल्लुक अपने खालिक व मालिक से हो जाये और

उसकी नुसरत व रहमत बन्दे के शामिल हाल हो जाए इसी वजह से कहा गया है कि पूरे कुरआन पाक का खुलासा अल्हम्दु शरीफ है और अल्हम्दु शरीफ का खुलासा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम है और पूरी बिस्मिल्लाह का खुलासा उसकी 'बा' में है चूंकि 'बा' राबिता और जोड़ के लिए आता है जिसका मतलब यह है कि बन्दा अपने रब खालिक व मालिक जिल्ल शानहू से जुड़ जाए और अपना सही ताअल्लुक कायम करले।

हक तआला शानहू हम सब को इस नुस्खा अक्सीर की सही कदरदानी की तौफीक अता फरमाए और अपनी जात आली का सही ताअल्लुक नसीब फरमाए। आमीन।

सात सौ बरस की इबादत का सवाब

जुहरतुर्रियाज़ में लिखा है कि हदीस शरीफ में आया है कि जनाब रसूल मकबूल सल्ल० ने फरमाया है कि जब खुदा वन्दा तआला ने लौह व कलम को पैदा किया और कलम को हुक्म दिया कि लिखदे हर चीज को तौशा जो कुछ होने वाला है और बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से शुरू कर कलम ने निहायत अदब से हजार बरस में लौह महफूज में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखी, फिर इरशाद हुआ कि कसम है मुझे अपनी इज्जत व जलाल की कि जो कोई उम्मत मुहम्मदिया सल्ल० में से बाअदब बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

को एक बार पढ़ेगा उसके नामा आमाल में सात सौ बरस की इबादत का सवाब लिखा जाएगा।

हज़रत सुलेमान अलैयहिस्सलाम की अंगूठी

जुहरतुर्रियाज में यह भी मजकूर है कि जब खुदा वन्दा तआला ने चाहा कि हजरत सुलेमान अलैयहिस्सलाम को दुनिया में बादशाहत इनायत हो जिन्न व इन्स व तयूर, हवा, उनके ताबा हों, उस वक्त जिबराईल अलयहिस्सलाम को हुक्म हुआ कि बादशाहत की अंगूठी ले जाकर सुलेमान अलयहिस्सलाम को दे कि वह इसकी बरकत से तमाम रोए जमीन पर खिलाफत करे, जिबराईल अलयहिस्सलाम उस अंगूठी को लेकर फरिश्तों के हमराह हक सुबानहू तआला की तसबीह व तकद्दुस करते हुए आसमान से उतरे और हजरत सुलेमान अलयहिस्सलाम को वह अंगूठी दी और कहा कि यह हदया आपको मुबारक हो और सज्दा शुक्र बजा लाइये, हजरत सुलेमान अलयहिस्सलाम ने निहायत खुश होकर बनी इसराईल को हमराह लेकर सज्दा शुक्र अदा किया और उस अंगूठी के सबब से तमाम रोए जमीन पर कब्जा करके सल्तनत की। सत्ताईसवीं तारीख रमजानुल मुबारक की जुमे के दिन इस अंगूठी का नजूल हुआ और उसमें तीन सतरे नूरी खत में लिखी हुई थीं। पहली सतर में बिस्मिल्लाह, दूसरी में लाइलाहअ इल्लल्लाह और तीसरी में

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।

जब हजरत सुलेमान अलयहिस्सलाम को इन्तकाल हो गया वह अंगूठी फिर दुनिया से उठ गयी। फिर जब हमारे रसूल मकबूल सल्ल० मबऊस हुए तो फिर कामिल बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम का नुजूल हुआ और हमारे हजरत को कुल मखलूकात का नबी बनाया और आप की उम्मत के तमाम मुसलमान मर्द और औरत की जबान पर जारी किया बल्कि दिलों पर नक्श किया और ता कयामत वास्ते हिदायत बनी आदम के हमेशा को बाकी रखा।

बिस्मिल्लाह का नुजूल

असरारूल फातिहा में मजकूर है, हदीस शरीफ में आया है कि मेरे पास जिबराईल अलयहिस्सलाम आए और एक रेशमी कपड़े का पारचा उम्दा तोहफे में लाए उसमें एक कागज लिपटा हुआ था जिसमें बखत नूरानी लिखा था-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

बिस्मिल्लाह हर मर्ज के लिये शिफा है

एक और हदीस में है जिसके रावी हजरत जाबिर रजि० हैं कि जब बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नाजिल हुई अबर हट गया, हवा ठहर गयी, दरिया जोश में आया, चौपायों ने काद डाल दिये, शयातीन रांदे गये, पहाड़ चिल्ला उठे, एक

धुआं सा फैल गया कि उससे तमाम मक्का मुअज्जमा धुआंधार हो गया, अल्लाह जिल्ल शानहू ने कसम खाई कि मुझको अपने इज्जत व जलाल की कसम है कि-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हर मर्ज की दवा है और हर एक मरीफ के हक में शिफा है और पढ़ने वाले को सौ नेकियों का सवाब मिलेगा जन्नत में दाखिल बे हिसाब होगा और जिस चीज पर पढ़ी जाएगी मुअज्जिब बरकत होगी। फलहम्दुलिल्लाह

बैत

हर दमिश बामन दि सोखता लतफे दिगर अस्त
ऐं गदा हैं कि चह शाइस्ता इन्आम उफताद

बिस्मिल्लाह जीनतुल फातिहा है

तफासीर बय्यिना में है कि खुदा वन्द तआला ने बादशाहों को हजरत सुलेमान अलयहिस्सलाम से जीनत दी और पहाड़ों को तौर सीना से और तमाम शहरों को मदीना व मक्का से और सहराओं को वादी ऐमन से और मकानों को बैतुल मुकद्दस से और इबादतखानों को खाना काबा से और जियारतगाहों को मदीना मनव्वरा से और दरखतों को नखल तूबा से और नहरों को हौज कौसर से, और तमाम मखलूक को बनी आदम से और आसमानों को सितारों से और मलाइका को जिबराईल अलयहिस्सलाम से और जन्नतियों को हूर व कसूर से और तमाम शुहदा को हजरात

हसनैन अलयहिस्सलामुस्सलाम से, और शुजाओं को हजरत अली करमुल्लाह वजह से और सखियों को हजरत उसमान रजि० से और आदिलों को हजरत उमर फारूक रजि० से और सिद्दीकियों को हजरत सद्दीक अकबर रजि० से और तमाम नबियों और रसूलों को हमारे जनाब सरवर आलम मुहम्मद अरबी सल्ल० से और तमाम किताबों को कुरआन मजीद से और कुरआन मजीद को सूरः फातिहा से और सूरः फातिहा को

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

से, क्योंकि इसमें इस्मे अजीम है और जिसको इस्म आजम बिल तहकीक मालूम हो उसको फिर किसी और अमल और वजीफे की हाजत नहीं, जो कारबरारी के वास्ते कुछ और पढ़ता फिरे या किसी के पास अपनी कुछ आरजू व तमन्ना दुनियवी या दीनी लेकर जाए।

बिस्मिल्लाह आयत रहमत है

इमाम अजल अबू सईद अहमद हनफी अपनी तफसीर में इफादा फरमाते हैं कि हकीकत में अगर अल्लाह तआला को आलम पर रहमत मददेनजर न होती तो रहमान और रही की जगह पर जब्बार और कहहार मुकर्रर फरमाया होता क्योंकि जहां गजब मुतसव्विर होता है वहां

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहीं लिखी जाती, चुनांचि मिस्ल और सूरतों के सूरः बरात भी है, मगर इस सूरत में मुश्रिकों पर कहर व

कहारी का बयान है और

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

आयत रहमत है, तो कहर और रहमत दोनों एक जगह नहीं हो सकते, इसी वास्ते इसमें बिस्मिल्लाह नहीं।

और जानवर जिबह करते वक्त बिस्मिल्लह, अल्लाहु अकबर कहते हैं और रहमान व रहीम नहीं कहते ।

पस यही वजह है कि यह दोनो नाम रहमत के हैं और सूरत जिबह की कहारी पर दलालत करती है और इससे रहमत इलाही साफ जाहिर है और यह फकत जनाब रसूल मकबूल सल्ल० का बाअस है कि आपके तुफैल से आपकी उम्मत पर यह इनायत हुई, क्योंकि जनाब रहमतुल लिलआलमीन यानी हमारे हजरत रसूल मकबूल सल्ल० को अल्लाह तआला ने इस्म रऊफ व रहीम इनायत फरमाया और आपकी रहमत ने तमाम आलम को छिपा लिया और इस वास्ते तसदीक रहमत के और साफ खोलके कह दिया।

''वमा अरसलनाकअ इल्ला रहमतुल लिलआलमीन''

तरजुमाः- ऐ पैगम्बर! हमने तुम्हें रहमत ही रहमत बनाकर भेजा है। (आसान तरजुमा)

पस आदमी को चाहिए कि ऐसे नबी महबूब पर हमेशा दरूद व सलाम पढ़ता रहे और यह आयत करीमा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम को हर दम जबान पर तहारत में जारी रखे, अगर यह मुमकिन न हो तो सत्तर बार वत नमाज के बाद पढ़ता रहे, इसके बड़े फायदे हैं।

दस हजार नेकियां

कुतुब सहाह में हदीस है कि जिस वक्त कोई बन्दा मुसलमान कहता है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तो फरिश्तों को हुक्म होता है लिखो इस बन्दे के वास्ते हजार नेकियां वह फरिश्ते रात ताअज्जुब से अर्ज करते हैं कि इतने से अमल खफीफ के बदले हजार नेकियां, तो हुक्म होता है कि अच्छा दो हजार नेकियां लिखो, फिर फरिश्तों को और भी ज्यादा ताअज्जुब गुजरता है, फिर हुक्म होता है अच्छा तीन हजार नेकियां, आखिर दस हजार नेकियों तक नौबत पहुंचती है, तब फरिश्ते चुप रह जाते हैं। उस वक्त वह पाक परवदिगार फरमाता है कि कसम है मुझको अपनी इज्जत व जलाल की ऐ फरिश्तो! अगर तुम मेरी रहमत की वुसअत में कमी करते और तंगी पकड़ते चुप न होते तो कयामत तक यूं ही अपने बन्दे की नेकियां बढ़ाए चला जाता। वल्लाहु आलम

शेर और भेड़ियों से बकरियों की हिफाजत

हिकायतः मनकूल है कि एक बुजुर्ग अल्लाह वाले जंगल में बकरियां चराते थे। शेर भेड़िये न सताते थे किसी ने पूछा कि शेर भेड़ियों ने बकरियों से कैसे मुहब्बत जमाई

फरमाया जैसे चरवाहे ने खुदा वन्दे आलम से रब्त बढ़ाया और

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

को जबान व दिल पर जारी किया, यह उसकी तासीर है वरना बन्दा तो नाचीज है।

बिस्मिल्लाह की आवाज से जादू भूल जाना

मलफूज़ात मुतकल्लमीन में लिखा है कि एक शख्स ने जादू सीखने का इरादा किया। उस्ताद ने कहा जादू सीखने की शर्त यह है कि चालीस दिन नाम खुदा जबान से न लेना और कुरआन की आयम में से कुछ न पढ़ना जब तुझको जादू आएगा। इस शख्स ने ऐसा ही हकया चन्द दिनों में सीख के पक्का जादूगर हो गया। इत्तफाकन एक रोग किसी मकतब में उस जादूगर का गुजर हुआ, किसी लड़के के मुंह से निकला-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

की आवाज उसके कान में पहुंची। इस आवाज के सुनते ही जो कुछ जादू उसने सीखा था उसी वक्त भूल गया, गोया कभी कुछ जानता ही न था। सुब्हानल्लह! क्या तासीर है कि एक लड़के ने मकतब में

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

को पढ़ा और उसकी आवाज से जादूगर का जादू

मिट गया और सब कलमात जादू के उसकी जबान और दिल से फरामोश हो गये तो जो मुसलमान सद्के दिल से और खालिस निय्यत से

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

रखते हैं अगर वह इस शैतानी और खयालात नफसानी से महफूज रहें, खुदा वन्दे करीम के करम व फजल से क्या ताअज्जुब है।

शहर बिसताम में जादू का असर न होना

तरजीहुल आशिकीन में लिखा है कि शहर बिसताम में एक जवान खूबसूरत किसी साहब जमाल औरत पर आशिक हुआ। मुद्दत तक उसकी जुस्तुजू विसाल में परेशान रहा, लेकिन उसका मकसद किसी तरह हासिल न हुआ। आखिर खाक छानता मुसीबत झेलता विलायत के जादूगरों के पास गया और उनसे कहा कि कोई ऐसी तरकीब करो जिसमें मेरा मतलब हासिल हो जो कुछ माल दरकार हो मुझसे लो, जादूगरों ने कहा कि हमको ऐसा जादू आता है कि बहुत आसानी से तेरा मतलब पूरा हो जाए। तेरी मुराब बर आए, बयान कर क्या तमन्ना रखता है ? उसने कहा कि मेरा एक माशूक है शहर बिसताम में, विसाल की आरजू रखता हूं। जादूगरों ने जो बिसताम का नाम सुना, सन्नाटे में आ गए। चुप हो रहे। जवान ने पूछा यारो! तुमने क्यों

सकूत किया? जादूगरों ने जवाब दिया कि बिसताम में हमारा जादू कुछ असर नहीं करता इसलिए कि वहां एक शख्स बायजदी बिसतामी रहते हैं, उनके सबब से हमारा जादू कुछ असर नहीं रखता कि वहीं की खलकत रात दिन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

और लाइलाहअ इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का विर्द रखती है।

वह शख्स नाउम्मीद हुआ और उसने अपने घर का रास्ता लिया। मुसलमानों ने देखा कि जब शहर बिस्ताम बायजीद बिसतामी रह० की हिमायत से जादूगरों के जादू से महफूज रहा फिर जिस दिल में जिक्र खुरा समाया हो वह क्योंकर न हाफिज हकीकी की हिमायत से कार शैतानी से महफूज रहेगा।

बिस्मिल्लाह जमीअ अजकार का जौहर है

नकल है सुलतानुल आरफीन का मामूल था हर दम जबान पर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जारी रखते किसी ने पुछा कि ऐ शेख! इसकी क्या वजह है ? फरमाया कि दुनिया का जिक्र अंधेर है कि कलब पर तारीकी लाता है और जिक्र बहश्त का हूर व कसूर के वास्ते काबिल नफरत और जिक्र दोजख काबिल अफसोस

और जिक्र हक सुबहानहू तआला से कलब को नूर और दिल को सुरूर हासिल होता है।

उस साइल ने पूछा कि मैंने सुना है कि खुदा वन्द तआला ने आपको ऐसा आली मरतबा इनायत फरमाया है कि आप दरया में बे लाग बतौर खुशकी के चलते फिरते हैं। फरमाया कि यह कमाल की बात नहीं है-

मिसराः खाशाक नेज बर सर दरया गुजर कुन्द

यानी कूड़ा करकट पानी में ऊपर ही ऊपर बहता है।

फिर उसने अर्ज किया कि मैंने सुना है कि खुदा वन्दे आलम से आपने वह मरतबा पाया है कि आप मिस्ल फरिश्तों के हवा पर उड़ते हैं। फरमायाः कि यह उससे भी बरतर हैः

मिसराः बर हवा अमूर व मलख हम मी परिन्द

हवा पर चींवटी और टिड्डी भी उड़ती है।

उस पूछने वाले ने कहा या शेख! फिर कमाल की बात क्या चीज है ? फरमाया कि हर दम दिल और जबान ईज्द सुबहान की याद मे ंमश्गूल रहे, और कभी किसी हाल में भूले से भी उसकी याद दिल से न भूले, इन्सानियत इसी का नाम है और-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जामअ जमीअ अजकार का जौहर है उसका विर्द खूब है।

.....

बिस्मिल्लाह की बरकत का अजीब वाकिया

लमआन सूफिया में मरकूम है कि कोई वाइज अल्लाह वाले

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

के फजाइल किसी मजलिस में बयान फरमाते थे कि एक यहूदी की बेटी नाकतखुदा भी इस जलसे में मौजूद थी तासीर इस आयत करीमा की उसके दिल पर असर कर गयी। फौरन इसलाम कबूल कर लिया। उस वक्त से उस लड़की की जबान जद

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हो गया। चलते फिरते उठते बैठते हर बात में उसका यही तकिया कलाम था। इस वजह से उसके मां बाप निहायत दरजा उउसे नाराज रहते तरह तरह की उसको तकलीफें देते, चाहते थे कि कोई इल्जाम रखें और मार डालें वरना बिरादरी में बात हेटी होगी, और इस बात के जाहिर होने से निहायत शरमिन्दगी होगी। कहते हैं कि उस लड़की का बाप बादशाह वक्त का वजीर था, महर की अंगूठी खास उसके पास रहती थी। एक रोज बेटी को वह मोहर सुपुर्द की उसने।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कहके लेली और

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कह के अपनी जेब में रख ली। उसके बाप ने शब को सोते में उसकी जेब से निकाल कर दरया में फैंक दी। एक मछलनी निगल गई। सुबह को वह मछली शिकार हुई। मछली वाले ने ला के उसे वजीर को नजर करदी। उसने लेकर लड़की को वास्ते पकाने के दी। लड़की ने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कहकर लेली। जब मछली का पेट चाक किया तो वही अंगूठी मोहरदार उसके पेट से निकली। लड़की ने

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कहके फिर अपनी जेब में रखली और मछली पकाके बाप के आगे रखदी। बाद खाने के दरबार का वक्त आया लड़की से अंगूठी मांगी उसने।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कहके जेब से निकाल कर दी वह हैरान रह गया।

बारह हजार बिस्मिल्लाह की फजीलत

हदीस शरीफ में है सरवरे आलम सल्ल० ने फरमायाः जिसने बारह हजार

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

का विर्द या वजीफा पढ़ा अजाब जहन्नुम से छूटा, सीधा जन्नत को सिधारा, अगर मलकुल मौत इस दिन या

रात में इस बन्दे के पास आते हैं तो उसके मुवक्किल कहते हैं कि आज तो इसने

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

पढ़ी है। तब काबिज अरवाह उसकी रूह से कहते हैं ''बशरा लकअ'' यानी बशारत हो तुझको अल्लाह अल्लह तुझसे राजी है। जन्नत तेरा घर है। जहन्नुम तुझसे दूर। ऐ बन्दे! अल्लाह के अगर तेरी मरजी हो तो मैं तेरी रूह कब्ज करूं, वरना खाली फिर जाऊं। रूह कहती है मुझको दोजख का डर था। अब बहश्त की खुशखबरी सुनी है दुनिया की जिन्दगी दूभर है। यह सुनकर बासानी फरिश्ते उसकी रूह कब्ज करते हैं। राजतुससलाम की तरफ ले जाते हैं।

''अल्लाहुम्मअ अरजुक़ना फी जिन्नातिन नईम''

हर मुश्किल का हल

हजरत इबराहीम तयम्मी रह० अपने मलफूजात में तहरीर फरमाते हैं कि मुझको हजरत इलियास अलयहिस्सलाम ने तालीम की है कि जिसको कोई मुश्किल पेश आए और सारी तदबीरों से थक जाए तो उसको चाहिए कि जुमे के दिन बाद नमाज अस्र के बातहारत दिल को खुदा की तरफ मुतवज्जा करे और

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

के तीनों नामों को गुरूब आफताब तक बतौर निदा या दुआ के बराबर पढ़े जाए जब गुरूब हो जाए तो सज्दा में गिर के बतजरी वजारी हक सुबहानहू तआला से अपनी

हाजत मांगे। इन्शाअल्लाह तआला जरूर उसका मकसद पूरा हो जाएगा।

जहन्नुम से आजादी

इसरार फातिहा में लिखा है कि एक अअराबी ने रसूल मकबूल सल्ल० के हुजूर में हाजिर होकर अर्ज किया या रसूलुल्लाह! सल्ल० ''तजाहिर अला जंबी फसतगफिरली'' यानी में बड़ा गुनाहगार हूं खुदा वन्द करीम गफूरुर्रहीम से मेरे वास्ते मगफिरत मांगिए। रसूल मकबूल सल्ल० ने फरमायाः

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यानी तू बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम को पढ़ाकर वह अरहमुर्राहिमीन तेरे गुनाह बख्श देगा। फिर उस अअराबी ने मुतअज्जिब होकर अर्ज किया ''अयतुहा या रसूलुल्लाह'' यानी बस इतना ही या रसूलुल्लाह।रसूल मकबूल सल्ल० ने इरशाद फरमाया कि जो मुसलमान मर्द या औरत सच्चे यकीन से

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

का वजीफा पढ़ा करता है तो पाक परवरदिगार अपने फजल व करम से उस बन्दे को दोजख से आजाद कर देता है।

माल में बरकत

बहरूल उलूम ने लिखा है कि बकर बिन अब्दुल्लाह

ने मजनी ने अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह! मेरे माल में ज्यादती नहीं होती।

आन हजरत सल्ल० तो सुबह व शाम ''??????????????????'' यानी शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से अपनी जान पर और अपने माल और अहल पर बार खुदा या राजी रख मुझको उस पर जिसका तूने हुक्म किया और दरगुजर कर जिस पर तूने बाकी रखा ताकि न चाहूं मैं इस चीज की शताबी जिसमें तूने देरकी और न चाहूं मैं उस जीच में देरी जिसमें तूने जल्दी की। गर्ज उसको पढ़ना शुरू किया थोड़े ही दिनों में उनका माल बहुत कुछ बढ़ गया।

हजरत अकरमा रजि0 के ईमान का सबब

कुतुब अहादीस में मनकूल है कि मक्का की लड़ाई में जब कुफफार कुरैश वगैरह ने शिकस्त खाई अकरमा अबूजहल का बेटा भागा। दरिया के किनारे पहुंचा एक कश्ती में सवार हुआ देखा कि कश्ती के एक तख्ते पर लिखा है बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ''वकज्ज़बअ बिही कवमकअ वहुवल हक्क'' यानी शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान है निहायत रहम वाला और उसको झुठलाया तेरी कौम ने और वह सच्चा है। अकरमा ने यह देखकर बहुत कुछ इस तहरीर को मिटाया मगर जरा न मिटा, फिर वह समझा कि

बेशक यह कलाम हक है और दीन इस्लाम बरहक है। यह सोचकर फोरन मुसलमान हो गया। ऐ मुहम्मद सल्ल० की उम्मत वालो देखो कि वह हुरुफ सियाह कश्ती के तखते से अकरमा के मिटाने से न मिटे बल्कि उनके ईमान के बाअस हुए। फिर जो हक सुबहानहू वतआला ने अपने दस्ते कुदरत से तुम्हारे लूह दिल पर ''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' लिखा है शैतान लईन के मिटाने से कब मिट सकता है।

हजरत सिद्दीक अकबर रजि0 का इरशाद

हजरत सिद्दीक अकबर रजि० ने फरमाया ''??????????????????'' यानी क्या खूब है वह शख्स जिसने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम को पढ़ा। बहुत अच्छी तरह कयामत के दिन दरयाए रहमत इलाही में गौता लगाएगा यानी बहश्त की निअमतें बेहद उसको मिलेंगी।

हजरत उमर फारूक रजि0 का इरशाद

जनाब उमर फारूक आजम रजि० ने फरमाया ''??????????????'' अगर न होती बिस्मिल्लाह तो हलाक हो जाती मखलूकात।

हजरत उस्मान गनी रजि0 का इरशाद

जनाब जुन नूरैन हजरत उसमान गनी रजि० है फरमायाः ''??????????'' जिसने पढ़ ली बिस्मिल्लाह तमाम उम्र में एक बार न बाकी रहेंगे उसके गुनाह जर्रा भर।

फायदाः यानी एक बार पढ़ने से यह मुराद है कि बनिय्यत खालिस अकीदा के साथ पढ़के जिसने उस पर अमल भी किया तब उसके सब गुनाह मिटा दिये जाएंगे जैसा कि कलमा तय्यबा के बाब में वारिद है।

''मन कालअ लाइलाहअ इल्लल्लाह दखलुल जन्नतः''

यानी जिसने एक बार कलमा तय्यबा पढ़ा वह जन्नत में दाखिल होगा। एक बार पढ़ने से यही मुराद है कि वह इस्लाम में दाखिल हो गया। मुसलमान होकर पढ़ा। वरना अहले हुनूद को बहुत कलाम याद होते हैं मगर ऐलान इस्लाम नहीं होता इसलिए उनका वह अमल सही निय्यत, निय्यत खालिस और अकीदा दुरुस्त होना भी शर्त है।

हजरत अली मुरतजा रजि0 का इरशाद

हजरत मुरतजा करमुल्लाह वजहहू ने इरशाद

फरमायाः ''????????????''

यानी कोई ऐसा नहीं कि किसी मुकाम पर उतरा हो और उसने ''बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम'' पढ़के यह दुआ पढ़ी हो ऐ रब! उतार मुझको मुबारक मकाम में और तू बेहतर उतारने वाला है, तू इस दुआ की बरकत देता है अल्लाह उसको उस मकाम में और देखता है उसकी तरफ नजर रहमत से और इरशाद फरमाता है कि मैं तेरा निगाहबान हूं, हर एक तरह की बुराई से, जब तक तू इस मकाम में ठहरा हुआ है।

फायदाः यह दुआ सफर में पढ़ना चाहिए और अलावा सफर के भी बहुत बाबरकत दुआ है।

कयामत की होलनाकियों से निजात

हदीस शरीफ में आया है कि कयामत के दिन मैदान हश्र में जब आफताब सवा नीजा पर होगा लोग महशर की गरमी में पांव सर बरहना भूके पियासे पसीनों से डूबे हैरतजदा डर के मारे खड़े होंगे। उस वक्त हक सुबहानहू तआला जिबराईल अलयहिस्सलाम के माअरफत रसूल मकबूल सल्ल० को यह पैगाम भेजेगा कि मुहम्मद अपनी उम्मत के मुसलमानों से कह दो कि वही इस्म अब भी पढ़ें जो दुनिया में शिद्दत और मुसीबत के वक्त पढ़ा करते थे। फिर पुकारने वाला पुकारेगा कि मुहम्मद सल्ल० की उम्मत

के लोगो! पढ़ो वही नाम अल्लाह पाक के जिनकी वजह से तुम पर रहम होता था जिससे अब भी तुम पर रहम हो। यह सुनते ही तमाम मुसलमान बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कहने लगेंगे। उस वक्त हक सुबहानहू तआला का करम और फजल हो जाएगा सखती कयामत से और होल से महफूज रहेंगे।

फरिश्ता अजाब की पेशानी पर बिस्मिल्लाह

हदीस शरीफ में आया है कि जब मालिक जो कि दारोगा दोजख है चाहता है कि किसी फरिशता को तबकात दोजख में किसी पर अजाब जदीद करने के वास्ते भेजे तो पहले उस फरिशते की पेशानी पर लिख देता है बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम फिर वह फरिश्ता दोजख के हर एक तबके में बखूबी तमाम चलता फिरता है, दोजख की आग उस पर कुछ असर नहीं करती पस जिसने इस तसमिया को लोह दिल पर नक्श कर लिया है वह क्योंकर इस तसमिया की बरकत से आग दोजख से महफूज न रहेगा। तसमिया से मुराद बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम है।

अन्हारे जन्नत की इब्तदा

मुतबर किताबों में लिखा है कि जब मेराज को रसूल मकबूल सल्ल० तशरीफ ले गए हर एक तरह के नए नए

अजाइबात मुलाहिजा फरमाए तमाम बहश्तों की भी सैर की, वहां यह चार नहरें भी नजर मुबारक से गुजरीं जिनका जिक्र कुरआन शरीफ में आया है-

(१) फीहा अन्हारुन मिममाइन गयरअ आसिन

(२) व अनहारुम मिल लबनिल लम यतगययरू तअमहू।

(३) व अनहारुम मिन खामरिल लज्जतिल लिश्शारिबीन।

(४) व अनहारुम मिन असअलिम मुसफफा

(१) इसमें ऐसे पानी की नहरे हैं जो खराब होने वाला नहीं है।

(२) ऐसे दूध की नहरे हैं जिसका जायका नहीं बदलेगा।

(३) ऐसी शराब की नहरे हैं जो पीने वालों के लिये सरापा लज्जत होगी।

(४) ऐसे शहद की नहरे हैं जो नथरा हुआ होगा। (आसान तरजुमा)

आन हजरत सल्ल० ने पूछा कि असल उनकी कहां से है और कहां को जाती हैं। फरिश्ते ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्ल० इतना तो मुझे मालूम है कि यह चारों नहरें हौज कौसर में जाकर गिरती हैं और यह नहीं मालूम कि हां से आती हैं। इतने में एक फरिश्ता आपको वहां से उठाकर ले गया और दूर मन्जिलों की राह पर ले जाके एक दम में एक दरख्त के नीचे बिठा दिया, आपने देखा कि उस

दरख्त की जड़ में एक कब्बा है सफेद एक ही मौती का इतना बड़ा कि अगर सारी दुनिया उसके मुंह पर रख दी जाए तो ऐसा मालूम हो कि छोटी से चिड़िया किसी बड़े दरख्त की फुंग पर बैठती है और उस कब्बा में जबरजद का दरवाजा है उसमें फिर एक सोने का दरवाजा है उसकी कुंजी बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम है। आपने बिस्मिल्लाह पढ़ी फौरन दरवाजा खुल गया कुब्बा के अन्दर तशरीफ ले गए देखा कि उसी कुब्बे के चारों कोनों से यह चारों नहरें जारी हैं और एक कोने पर लफ्ज ''बिस्मिल्लाह'' का मरकूम है। दूसरे कोने पर लफ्ज ''अल्लाह'' का तहरीर है, तीसरे कोने पर लफ्ज ''रहमान'' का मसतूर है। चौथे कोने पर लफ्ज ''रहीम'' का लिखा है। बिस्मिल्लाह के (मीम) से पानी की नहर जारी है, अल्लाह की (ह) से दूध की नहर रवां है और रहमान के (नून) से शराब की नहर रवां है और रहीम की (मीम) से शहद की नहर बहती है, फिर वहीं आपको आवाज आई या मुहम्मद! जो कोई तेरी उम्मत में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ा करेगा उन नहरों से उकबा में महरूम न रहेगा।

''अल्लाहुम्मअ अकूलु बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
फरजुकना हाजा नअमु बिफजलिकअ व करमकअ''

ऐ अल्लाह! कहता हूं मैं बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पस यह निअमतें बहश्त की अपने फजल व करम से हमको नसीब कर।

दर्द सर का इलाज

कैसर रूम ने हजरत उमर रजि० की खिदमत में दर्द सर की शिकायत अर्ज की आपने एक टोपी सिलवा कर भेज दी जब तक वह टोपी सर पर रहती दर्द को सकून रहता और जब उसको उतारता फिर दर्द होने लगता उसको तअज्जुब हुआ और खोलकर उस टोपी को देखा तो उसमें बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखी थी।

फुजैल बिन अयाज फरमाते हैं कि बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम की बुजुर्गी कामों पर ऐसी ही है जैसे खुदा की बुजर्गी बन्दों पर।

बिस्मिल्लाह पढ़ने वालों के लिये मख्सूस महल

असरारुल अबरार में अब्दुल्लाह बिन उमर अलफारूक रजि० से रिवायत है कि जनाब रसूल मकबूल सल्ल० ने फरमायाः कि जबलुर्रहमतह नाम का एक पहाड़ है उसकी चोटी पर मदीनतुस्सलाम एक शहर मशहूर है उस पर एक कमरा है बैतुल हलाल उसके चार हजार दरवाजे हैं वह मकान बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के पढ़ने वालों को मिलेगा। वहां से वह लोग बेतकल्लुफ व बे हिजाब जिस दरवाजे से चाहेंगे अपने परवर दिगार को देखेंगे। और दीदार इलाही हमेशा उन लोगों को हुआ करेगा।

दारून नूर, का जीना बिस्मिल्लाह

जुहरतुर्रियाज में जनाब अली मुरतजा करमुल्लाह वजहहू से रिवायत है कि जनाब रसूल मकबूल सल्ल० ने इरशाद फरमाया कि जन्नत में एक घर है उसका नाम दारुन नूर है उसमें तमाम चीजें नूर ही नूर की हैं और वह घर हवा पर कायम है जब मुसलमान साहब ईमान अल्लाह तआला जिल्ल शानहू का दीदार चाहेंगे हुक्म होगा कि बालाखाने पर आओ वह कहेंगे कि ऐ परवर दिगार! इसका जीना किधर है ? आवाज आएगी बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम उसका जीना है पस बिस्मिल्लाह पढ़ते हुए फौरन उस मकाम पर पहुंच जाएंगे बे कैफ व बे जहत वहां हक सुबहानहू तआला का दीदार पाएंगे, फिर उस वक्त यह खुशखबरी उन मुसलमानों को सुनाई जाएगी।

''सलामु अलैयकुम इबादी व रजीतुहुम अन्नी फाना अनकुम राजिन।''

यानी मुसलमानों! सलामती हो तुम पर। ऐ मेरे बन्दो! तुम राजी हुए मुझसे मैं राजी हुआ तुम से।

रब्बना तकब्बल मिन्ना इन्नकअ अन्तस समीउल उलूम।

वतुब अलयना इन्नकअ अन्तत तव्वाबुर्रहीम।

बिहुरिमत जयबिकअ सययदुल मुरसलीन।

सल्लल्लाहु तआला अला खयरि खलकिही
सयियदिना व मवलाना व हबीना मुहम्मदिंव
व आलिही व असहाबिही अजमईन
इला यवमिद्दीन।

मौ० फारूक गुफरलहू
खादिम जामिआ महमूदिया अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ (यू० पी०)

.....